भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-1 /अंक-11 / मई -2022

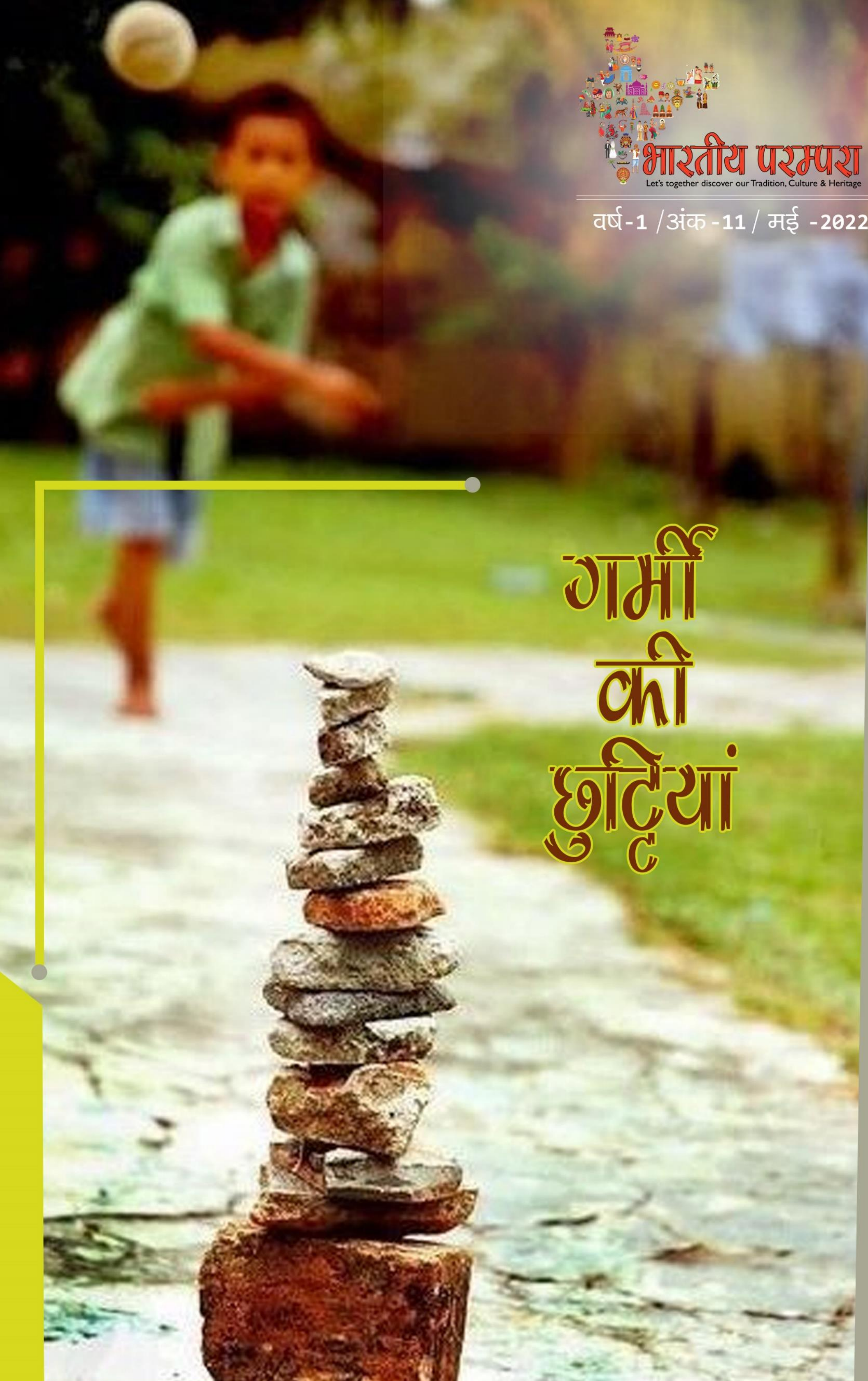

गर्मी की छुट्टियां

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-1 /अंक-11 / मई -2022

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

मई माह

साका कैलेण्डर - 1944 विक्रम संवत - 2079 अयान - उत्तरायन ऋतु - ग्रीष्म

सोम	30 ज्येष्ठ कृ. अमावस्या, वट सावित्री व्रत शनि जंयती	02 बैशाख शु. द्वितीया, मासिक कार्तिगाई	09 बैशाख शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी	16 बैशाख शु. पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा व्रत, चंद्र ग्रहण	23 ज्येष्ठ कृ. अष्टमी, कालाष्टमी
मंगल	31 ज्येष्ठ शु. प्रतिपदा, रोहिणी व्रत, इष्टि	03 बैशाख शु. तृतीया, अक्षय तृतीया, परशुराम जंयती	10 बैशाख शु. नवमी, सीता नवमी	17 ज्येष्ठ कृ. प्रतिपदा, नारद जंयती	24 ज्येष्ठ कृ. नवमी
बुध		04 बैशाख शु. तृतीया, विनायक चतुर्थी व्रत	11 बैशाख शु. दशमी, त्रिशूर पूरम	18 ज्येष्ठ कृ. तृतीया	25 ज्येष्ठ कृ. दशमी
गुरू		05 बैशाख शु. चतुर्थी	12 बैशाख शु. एकादशी, मोहिनी एकादशी व्रत	19 ज्येष्ठ कृ. चतुर्थी, एकदंत संकष्टी चतुर्थी	26 ज्येष्ठ कृ. एकादशी, अपरा एकादशी व्रत
शुक्र		06 बैशाख शु. पंचमी	13 बैशाख शु. द्वादशी, प्रदोष व्रत, परशुराम द्वादशी	20 ज्येष्ठ कृ. पंचमी	27 ज्येष्ठ कृ. द्वादशी, प्रदोष व्रत
शनि		07 बैशाख शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी	14 बैशाख शु. त्रयोदशी, नरसिंघ जंयती	21 ज्येष्ठ कृ. षष्ठी	28 ज्येष्ठ कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्री
रवि	01 बैशाख शु. प्रतिपदा, सूर्य ग्रहण आंशिक	08 बैशाख शु. सप्तमी, मातृ दिवस, गंगा सप्तमी,	15 बैशाख शु. चतुर्दशी, वृषभ संक्रांती	22 ज्येष्ठ कृ. सप्तमी, भानू सप्तमी	29 ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, मासिक कार्तिगाई

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

अक्षय फलदायक पर्व है अक्षय तृतीया

वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को बसंत ऋतु का समापन होकर ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भ होता है और इसी दिन को हम सनातनी **'अक्षय तृतीया' या 'आखा तीज'** के रूप में मनाते हैं। यह दिन अबूझ या सर्वसिद्ध या स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में माना गया है, इसलिये सनातन धर्म में अक्षय तृतीया का दिन बेहद शुभ माना जाता है। इस दिन अबूझ मुहूर्त होने के कारण किसी भी तरह के शुभ कार्य किये जा सकते हैं यानी बिना कोई पंचांग देखे हर प्रकार का शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, किसी भी प्रकार के नए काम की शुरुआत से लेकर महत्वपूर्ण चीजों की खरीदारी वगैरह काम भी बिना किसी शंका के किए जाते हैं। यही कारण है इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है।

जिसका अर्थ है कि इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है। माना तो यहाँ तक जाता है कि इस दिन यदि हम जाने-अनजाने में किये गए अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करें तो भगवान उन अपराधों को क्षमा ही नहीं करते बल्कि हमें सदगुण भी प्रदान कर देते हैं। यही कारण है कि आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में हमेशा हमेशा के लिए समर्पित कर उनसे सदगुणों का वरदान माँगने की परंपरा है। अक्षय तृतीया से जुड़े अनेकों तथ्यों में से कुछ पौराणिक तथ्य या घटनाएं जो इतिहास के पन्नों में अपना विशेष स्थान बना चुके हैं, प्रस्तुत करते है -

1] भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना होती है यानि **सतयुग और त्रेता युग का प्रारम्भ** इस तिथि पर ही हुआ था।

2] अक्षय तृतीया के दिन प्रभु विष्णु के 3 अवतारों की पूजा की जाती है। एक भगवान परशुराम, दूसरा नर नारायण और तीसरा हयग्रीव क्योंकि इन सभी का जन्म आज ही के दिन हुआ था ।

3] एक तथ्य यह भी है कि प्रभु विष्णु जी के छठे अवतार भगवान परशुराम (आठ पौराणिक पात्रों में से एक हैं) जिन्हें अमरता का वरदान प्राप्त है और इसी अमरता के चलते ही यह तिथि अक्षय मानी गयी है।

4] ऐसी मान्यता है कि माता लक्ष्मी और **श्री विष्णु जी का विवाह** इसी दिन हुआ था।

5] आज ही के दिन **माँ गंगा का अवतरण धरती पर हुआ** था यानी भागीरथ जी तपस्या के बाद गंगा जी को इसी दिन धरती पर लाए थे।

6] **ब्रह्मा जी के पुत्र अक्षय कुमार का अवतरण** भी अक्षय तृतीया के दिन हुआ था ।

7] मान्यता है कि भंडार और रसोई की देवी **माँ अन्नपूर्णा जिनका दूसरा नाम 'अन्नदा' भी है, का जन्म** भी अक्षय तृतीया के दिन हुआ था।

8] आज ही के दिन प्रभु महादेव ने कुबेर की तपस्या से खुश हो ऐश्वर्य का आशीर्वाद दिया जिससे उन्हें माता लक्ष्मी की प्राप्ति हुई।

9] कुबेर जी ने तुरंत ही माता लक्ष्मी जी की पूजा इसी दिन से ही प्रारम्भ कर दी, कुबेरजी द्वारा प्रारम्भ की गयी मां लक्ष्मी जी की पूजा की परंपरा के आधार पर ही भारत में अक्षय तृतीया वाले दिन लाल कपड़े में नए बही खाते शुरू किए जाने की प्रथा का शुभारम्भ हुआ।

10] महर्षि वेदव्यास जी और श्री गणेश जी ने इस शुभ दिन से ही **महाकाव्य महाभारत के लेखन** का कार्य प्रारंभ किया था।

11] द्वापर युग में प्रभु श्रीकृष्ण के परम बाल सखा सुदामा अक्षय तृतीया के दिन ही **प्रभु श्रीकृष्ण से मुलाकात कर उपहार** में उन्हें बड़े ही संकोच के साथ सूखे चावल भेंट किए थे जिसके चलते उनके भौतिक जीवन का उद्धार हुआ।

12] **चीरहरण के वक्त द्रौपदी** की पुकार पर प्रभु श्रीकृष्ण ने आज ही के दिन उसे चीरहरण से बचा कर उसकी इज्जत की रक्षा करी थी।

13] अक्षय तृतीया के दिन ही पाण्डव ज्येष्ठ युधिष्ठिर को वरदान स्वरुप वह **अक्षय पात्र मिला जिसमें रखी हुई भोजन सामग्रियां तब तक अक्षय (ख़त्म नहीं होगी) रहेंगीं**, जब तक द्रौपदी उसमे से परोसती रहेगी।

14] अक्षय तृतीया के दिन ही **द्वापर युग के साथ महाभारत युद्ध** का भी समापन हुआ था।

15] प्रसिद्ध पवित्र तीर्थस्थल **श्री बद्री नारायण जी के कपाट** भी अक्षय तृतीया वाली तिथि से ही दर्शन के लिए खोले जाते हैं।

16] साल में एक ही बार अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर वृंदावन के श्री बांके बिहारी जी मंदिर में भक्तों को **श्री विग्रह चरण के दर्शन** होते हैं अन्यथा बाकी दिनों में पूरे साल चरण वस्त्रों से ढके रहते हैं।

17] बसन्त पंचमी से प्रारम्भ हुए लकड़ी के चयन पश्चात अक्षय तृतीया वाले दिन से ही जगन्नाथ पूरी में आयोजित होने वाली रथयात्रा की तैयारी बलराम, सुभद्रा और भगवान श्रीकृष्ण के **रथों के निर्माण** के साथ आरम्भ हो जाती है।

18] अक्षय तृतीया जैन धर्मावलंबियों के महान धार्मिक पर्वों में से एक है। इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान, जिन्हें भगवान आदिनाथ भी कहा जाता है, ने एक वर्ष की पूर्ण तपस्या करने के पश्चात इक्षु (शोरडी-गन्ने) रस से पारायण किया था। इसी कारण से जैन धर्म में इस दिन को अक्षय तृतीया के साथ साथ **'इक्षु तृतीया'** भी कहते हैं। इसलिये अक्षय तृतीया कहिये या इक्षु तृतीया वाला यह दिन भगवान आदिनाथ, जैनों के पहले भगवान की स्मृति में मनाया जाता है।

राजस्थान के तीन प्रमुख शहर **बीकानेर अपनी स्थापना का ५३५ वां जन्मदिन तो झीलों का शहर उदयपुर इस अक्षय तृतीया को ४६९ साल का हो रहा है।** वहीं राजस्थान के नागौर शहर की स्थापना महाभारत काल में हुई थी और तब इसे अहिछत्रपुर नगरी के नाम से जानते थे।

अन्त में पाठकों की जानकारी के लिए बताना चाहूंगा कि आखा बीज को बीकानेर नगर की स्थापना हुयी और आखा तीज को पतंग उड़ाकर उत्सव मनाया गया था। इसलिये इन दोनों दिनों परंपरागत रूप से मूंग, मोठ, बाजरे व गेहूं का खीचड़ा व ठंडी इमलाणी के साथ साथ चार परत के फुल्के और हरी पत्तियों वाली चंदलिया की सब्जी बनती है। वहीं अक्षय द्वितीया पर लोग घरों में पूजा करके नई मटकी डालते हैं। यहीं नहीं स्थापना दिवस वाले दिन दिनभर पतंगबाजी का दौर भी चलता है।

इन्हीं सब को किसी कवि ने -

"डागलियै चढ किनो उडासो, मिल सगला रमझोल मचासो,
खिचडलो घी भर-भर खासो, इमलोणि रो रस भी पासो,
छायी मनडे ऊमंग अपार, आयो आखातीज रो त्यौहार"

पंक्तियों के माध्यम से अपनी खुशी व्यक्त की है। इसलिये स्थापित परंपरा को निभाते हुए मटकी का पूजन कर -

सर्वेषां मंगलं भूयात् सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।

[– ग. पु. अ. 35.51] के सिद्धान्त अनुसार जहाँ घर, परिवार, कुटुम्ब, बिरादरी, शहर, प्रदेश, भारत देश व विश्व की खुशहाली की प्रार्थना की जा रही है, वहीं खीचड़े, इमलाणी वगैरह का ठाकुरजी को अरोगा कर प्रसाद लिया जायेगा।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी

अक्षय तृतीया का महत्व
जानने के लिए आइकन को स्पर्श करें - WWW.

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें

सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

WHITE BERRY
RESIDENCY
LUXURIOUS
1 & 2 BHK & Jodi Flat
www.whiteberryresidency.com
POSSESSION
DECEMBER 2022
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.
+91 98705 80810, 85913 69996

www.kingswedsqueens.com
GAATHBANDHAN
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

स्वस्तिक बनाने के तथ्य और स्वस्तिक कैसे बनाया जाता है ?

हिंदू सनातन धर्म मे कोई भी पूजा, पाठ या शुभ कार्य आरंभ करने से पहले **"स्वस्तिक"** का चिन्ह जरूर बनाया जाता है। स्वस्तिक बहुत ही शुभ माना जाता है। कहा जाता है कि स्वस्तिक बनाने से सभी कार्य सफल होते है। हिंदू धर्म के परंपरा के अनुसार स्वस्तिक बनाना बहुत ही मंगल होता है।

स्वस्तिक का उदगम संस्कृत के "सु" उपसर्ग और "अस" धातू को मिलकर बना है। संस्कृत में "सु" का अर्थ शुभ/मंगल और "अस्ती" का मतलब होना है अर्थात कोई भी कार्य शुभ और मंगल होना है।

"स्वस्तिक" बनाते समय हमेशा लाल रंग का ही उपयोग किया जाता है। क्योंकि लाल रंग भारतीय संस्कृति में शुभ माना जाता है। धनवृद्धी, गृहप्रवेश, ग्रहशांति, वास्तुदोष निवारण, नई दुकान मे व्यापार की वृद्धि और लाभ होने के लिए या फिर कोई भी पूजा पाठ करने से पहले स्वस्तिक बनाया जाता है। इसके बगैर कोई भी पूजा की शुरुवात नही की जा सकती है।

ॐ और स्वस्तिक को शुभता का प्रतीक माना जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार स्वस्तिक बनाने से नकारात्मकता का प्रभाव दूर होता है। दिशा के अनुसार उत्तर पूर्व दिशा मे स्वस्तिक बनाना शुभ माना जाता है। इससे सकारात्मकता की ऊर्जा आती है। जहां स्वस्तिक बनाया जाता है वहां धन, आरोग्य, सुख, सौभाग्य, उन्नती, संपन्नता एवं शांति सभी उपलब्ध होता है।

"स्वस्तिक" को भारत के अलावा अन्य देशो मे भी शुभ माना जाता है। हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म मे भी स्वस्तिक को बडी

मान्यता दी है। हिंदू धर्म मे "स्वस्तिक" चिन्ह की चार रेखाओ के अलग अलग अर्थ माने जाते है। स्वस्तिक की व्याख्या **चार वेद, चार ऋतू, चार युगो और चारों दिशाओं** से की गयी है।

स्वस्तिक के दो प्रकार होते है- **"दाया स्वस्तिक" और "बाया स्वस्तिक। दाहिना स्वस्तिक - 'नर' का प्रतीक है और बाया स्वस्तिक - 'नारी 'का प्रतीक है।** स्वस्तिक की रेखाये बहुत कुछ दर्शाती है, स्वस्तिक की खडी रेखाये सृष्टि की उत्पत्ति और आडी रेखा सृष्टी के विस्तार का प्रतीक है और स्वस्तिक मे जो बिंदू है उसे श्री विष्णु जी का "नाभिकमल" मानते है। वही से सृष्टी का उगम स्थान है। स्वस्तिक के मध्यबिंदू को दिशा का प्रतीक भी माना जाता है।

स्वस्तिक को गणेश जी का रूप भी माना जाता है। सिर्फ एक स्वस्तिक चिन्ह बनाने से गणेश जी की स्थापना हो जाती है।

स्वस्तिक का आकार गणित के धन स्वरूप जैसा हैं। एक आडी रेखा और एक खडी रेखा से स्वस्तिक बनता है, मतलब ये रेखाएं आपस में मिलकर बनती है तो इसे मिलन का प्रतीक भी माना जाता है।

स्वस्तिक को सही तरीके से लगाने से संपूर्णता और एकाग्रता की प्राप्ति होती है। स्वस्तिक से सकारात्मकता की ऊर्जा मिलती है। इस से हमारा स्वास्थ्य भी जुडा होता है। अगर "स्वस्तिक" को घर के बाहर बनाया जाये तो इससे हमारे घर में सकारात्मकता रहती और स्वास्थ मे सुधार बना रहता है।

"स्वस्तिक" बनाते समय उसकी की रेखा को नीचे से लेकर ऊपर की तरफ बनाते हैं, इसका अर्थ यह है कि हम उन्नती की तरफ बढते जाये।

स्वस्तिक बनाते समय यह मंत्रोचारण करना चाहिए – **"ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृध्दश्रवा:, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्योः अरिष्टनेमी:. स्वस्ति नो ब्रीहस्पतीर्दधातु ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।"**

अर्थात : "महान कीर्ति वाले "इंद्र देव" हमारा कल्याण करो, विश्व के ज्ञान स्वरूप "पूषा देव" हमारा कल्याण करो, जिसका हथियार अटूट है ऐसे "गरुड़ भगवान" हमारा मंगल करो, हे "बृहस्पति देव" हमारा मंगल करो।

- सोनल पंवार जी

अगर आप अपने
'शब्दों के मोती'
भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना
चाहते है तो हमे
सम्पर्क करें!
आपका लेख वेबसाइट
पर भी प्रकाशित किया जायेगा
paramparabhartiya@gmail.com

जीवन एक संसार

हमेशा याद रखना
जीभ कभी फिसलती
नहीं है...
दिमाग में जो चल रहा है
वही जीभ पर आता है।

धोखा भी बादाम
की तरह है...
जितना खाओगे
उतनी अक्ल आएगी।

पीठ पीछे नफरत
और मुंह पर प्यार...
आज कल की
दुनिया का यही है
कारोबार...!!

जीवन में सुखी रहने
के लिए दो शक्तियों का
होना जरूरी है -
पहली सहन शक्ति व
दूसरी समझ शक्ति।

समय इंसान को सफल
नहीं बनाता...
समय का सही
इस्तेमाल ही इंसान
को सफल बनाता है...!!

पतझड़ में ही
रिश्तों की परख होती है
बाकी
बारिश में तो हर
पत्ता हरा ही दिखता है !

भूले बिसरे शीतल पेय

धनिया पेय –

ठंडे पानी में धनिया पाउडर, खाने वाला कपूर, लौंग, इलायची, काली मिर्च और शक्कर डालकर 2 घंटे के लिए भिगो दे। फिर यह पानी छानकर पिए।
यह एसिडिटी कम करता है साथ ही जीभ का स्वाद बढ़ाता है।

चुकंदर (बीटरूट) छाछ –

दो चम्मच चीनी, आधा छोटा चम्मच नमक, आधा छोटा चम्मच काला नमक, आधा छोटा चम्मच काली मिर्च पाउडर, आधा छोटा चम्मच चाट मसाला, एक छोटा चम्मच जीरा पाउडर, एक चुटकी हींग, एक गिलास छाछ, दो टेबलस्पून चुकंदर (बीटरूट) का पेस्ट इस सबको अच्छे से मिलाये और ठंडा करके पेश करना।
इससे चेहरे पर चमक आती है और हीमोग्लोबिन बढ़ता है। जल्दी ही पच जाता है साथ ही शरीर की गर्मी को कम भी करता है।

पीयूष –

एक कप मलाई वाला दही, एक कप नींबू का रस, 10 चम्मच शक्कर, आधा छोटा चम्मच जायफल पाउडर, 1 चुटकी पीला कलर, आधा छोटा चम्मच नमक, तीन कप दूध, 3 कप पानी, मनचाहे ड्राई फ्रूट की कतरन।

यह सामग्री शक्कर पिघलने तक अच्छे से मिलाएं और इसमें ड्राई फ्रूट कतरन डाल दीजिए। जब पीना हो तब उसमें दो बूंद नींबू का रस डालकर अच्छे से मिक्स करके पिए।

गोंद कतीरा -

(गोंद कतीरा (Tragacanth Gum) पेड़ों से निकलने वाला चिपचिपा पदार्थ होता है और यह भारत में ग्रीष्म ऋतु में खाया जाता है, यह बबूल, कीकर, और नीम की लकड़ी से निकाला जाता है)

गोंद कतीरा का थोड़ा दरदरा पाउडर बना लें, फिर एक कटोरे में यह एक टेबलस्पून पाउडर लेकर एक कप पानी में भिगो दें। उसे 3 घंटे के लिए भिगोये। सर्व करते समय एक गिलास में यहां फुला हुआ गोंद कतीरा ले, इसमें रूह अफजा या रोज सिरप 4 टेबलस्पून डालें और तीन चौथाई गिलास ठंडा दूध डालें। अच्छे से मिलाये और सर्व करें।

इससे दिल और दिमाग दोनों ठंडा रहता है और गर्मी से बचाता है।

घरेलू नुस्खे -

१) सुबह ब्रश करने के बाद दो कली लहसुन की लेने से हाई ब्लड प्रेशर कम हो जाता है।

२) अमचूर को पानी में पीसकर लगाने से छोटी-छोटी फुंसियां ठीक हो जाती है।

३) तुलसी के पत्तों का रस बालों में लगाने से बाल काले होते हैं।

४) दर्द और कांटा चुभे जगह साफ छनी हुई मिट्टी गीली करके बांधने से दर्द दूर होगा।

घरेलू उपाय –

१) पानी पूरी बनाते समय सोडा वाटर से पानी पुरी फूलती है और कड़ी भी रहती है।

२) समोसे के आटे में थोड़ा सा नींबू का रस और शक्कर डालने से उसका कवर टेस्टी लगेगा।

३) नान बनाते समय आटा दूध में गूंधिए, इससे नान नरम बनेगी।

४) ब्रेड दूध में भिगोकर तलने से ब्रेड में तेल कम लगता है।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी

लघुकथा - बदलता कैडर

छात्र संघ चुनाव के वोट पड़ चुके थे सभी को वोटों के परिणाम का बेसब्री से इंतजार था। खाकी वर्दी वाले वोटों की गिनती के दौरान किसी को भी कॉलेज के अंदर फटकने नहीं दे रहे थे। सभी छात्रों के मन में एक ही विचार आ रहा था कि इस बार छात्र संघ का अध्यक्ष कौन बनेगा? सभी के कान माइक की तरफ लगे हुए थे। बाहर प्रत्याशियों के समर्थन में समर्थक जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे।

कॉलेज के छात्रसंघ के चुनाव में मुख्य आकर्षण अध्यक्ष पद का होता है अध्यक्ष पद पर वैसे तो कई प्रत्याशी मैदान में थे परंतु मुख्य संघर्ष संजय और देव के बीच था।

मैं देव के समर्थकों में से एक था। देव मेरा लंगोटिया यार था। हम बचपन से अब एक साथ खेले कूदे और पढ़े थे। इंटरमीडिएट तक हमारी दोस्ती स्कूल में चर्चा का विषय बनी रही इंटरमीडिएट के बाद मैं बीएससी कोर्स में एडमिशन के लिए बाहर गया। चूंकि बीएससी कोर्स उस समय कस्बे में नहीं था। जिसके कारण मुझे बाहर जाना पड़ा। देव ने उसी कस्बे में बीए में दाखिला ले लिया था। अब हम दोनों रोज नहीं मिल पाते थे। जब मुझे पता चला कि देव छात्र संघ चुनाव लड़ने के लिए अध्यक्ष पद के लिये नामांकन दाखिल किया है तो मैं एक हफ्ते के लिये वापस कस्बे आ गया। जी तोड़ कर मेहनत करी। मुझे पूरा विश्वास था कि देव ही बाजी मारेगा।

थोड़ी देर में संजय के समर्थकों के द्वारा अफवाह फैला दी गई कि संजय 43 मतों से आगे चल रहा है फिर क्या था,

संजय जिंदाबाद संजय जिंदाबाद के नारे से चारों तरफ गूंज उठा किंतु अभी कुछ वोट खुलेने बाकी थे इस कारण मुझे अभी भी ऐसा लग रहा था कि देव आगे निकल सकता है, तभी उड़ती हुई खबर आई कि 10 वोटों से देव आगे चल रहा है। 10 मिनिट बाद आखिरी परिणाम भी आ गया। देव कॉलेज कैंपस से बाहर निकला सैकड़ों छात्र देव जिंदाबाद! देव जिंदाबाद! के नारे लगाते हुए पूरी सड़क पर फैल गए।

देव ने कालेज के प्राचार्य से आशीर्वाद और जीत का प्रमाण पत्र लिया। मैं भी देव को शुभकामनाएं देना चाहता था परंतु सैकड़ों छात्र देव को घेरे हुए थे। मैं उसके लिए बेचैन हो उठा। भीड़ को चीरते हुए देव के पास पहुंचा मैं उसको अपनी शुभकामनाएं देना चाहता था परंतु नहीं दे सका। भीड़ ने देव को उठा लिया। मुझे ऐसा लगा कि लोग मेरे देव को मुझसे दूर ले जा रहे हैं कुछ समय बाद देव ने सबका घर-घर धन्यवाद देने का कार्यक्रम बनाया जिन्होंने जिताने के लिए तन मन धन से सहयोग दिया था। मुझे लगा कि वह मेरे घर भी आएगा। मैंने देव के स्वागत के लिए विभिन्न प्रकार के व्यंजनों और शरबत का इन्तजाम किया था, परंतु यह क्या वह तो मेरे घर आया ही नहीं।

मेरी परीक्षा भी नजदीक आ गई थी इसलिए मैं वापस शहर चला गया। वैसे तो मैं मेरे कस्बे से दूर था लेकिन देव मेरे दिल के करीब था। इसी दौरान देव का शपथ ग्रहण समारोह 20 तारीख को सुनिश्चित हुआ। मैं 20 तारीख का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। 15 तारीख को मेरा दूसरा मित्र सौरभ आया और बोला "क्या देव के समारोह में नहीं चलना है?"

मैंने कहा "समारोह तो 20 तारीख को होना निश्चित हुआ था।"

सौरभ बोला "तुम्हारी बात सही है। समारोह 20 को ही होना था किंतु मंत्री महोदय 15 तारीख को कस्बे में आ रहे हैं तो ऐसा निर्णय लिया गया कि मंत्री जी से ही शपथ ग्रहण करवा लिया जाए।“

मैंने कहा "ठीक है कल मैं पहुँच जाऊँगा।" मैं मन ही मन सोचने लगा कि शायद मैं देव की दोस्ती के लायक नहीं था। तभी तो उसने सभी को आमंत्रण पत्र दिया और मुझे नहीं दिया। मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि समारोह में नहीं जाऊंगा। **बिन बुलाए तो खुदा के पास भी नहीं जाता है। अंत में मेरी आत्मा ने मुझे झकझोरा और कहा कि अपने मित्र को भुल जाना ठीक नहीं है।**

आखिरकार मैं समारोह के लिए में तैयार हो गया। वहां पहुंचने पर देव मुझसे बोला अरे तुम आ गए अच्छा किया तुम्हारा नाम तो मैं भूल ही गया था इतना कहते हुए देव ने आमंत्रण पत्रिका मेरी ओर बढ़ा दी और आगे बढ़ गया।

अब मेरी और देव के बीच की दूरियां बढ़ती जा रहीं थी। मैंने कई बार देव से सम्पर्क करने की कोशिश की परंतु निराशा ही हाथ लगी।

इस घटना को कई साल गुजर गए है। देव अब मंत्री पद पर है और मैं एक साधारण क्लर्क।

बचपन में मैं और देव दोनों ही गरीब थे शायद तभी हमारी दोस्ती थी। अब मेरा और देव का कैडर बदल चुका है। इसलिये देव पुराने कैडर में नहीं जाना चाहता है।

- डॉ० कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी

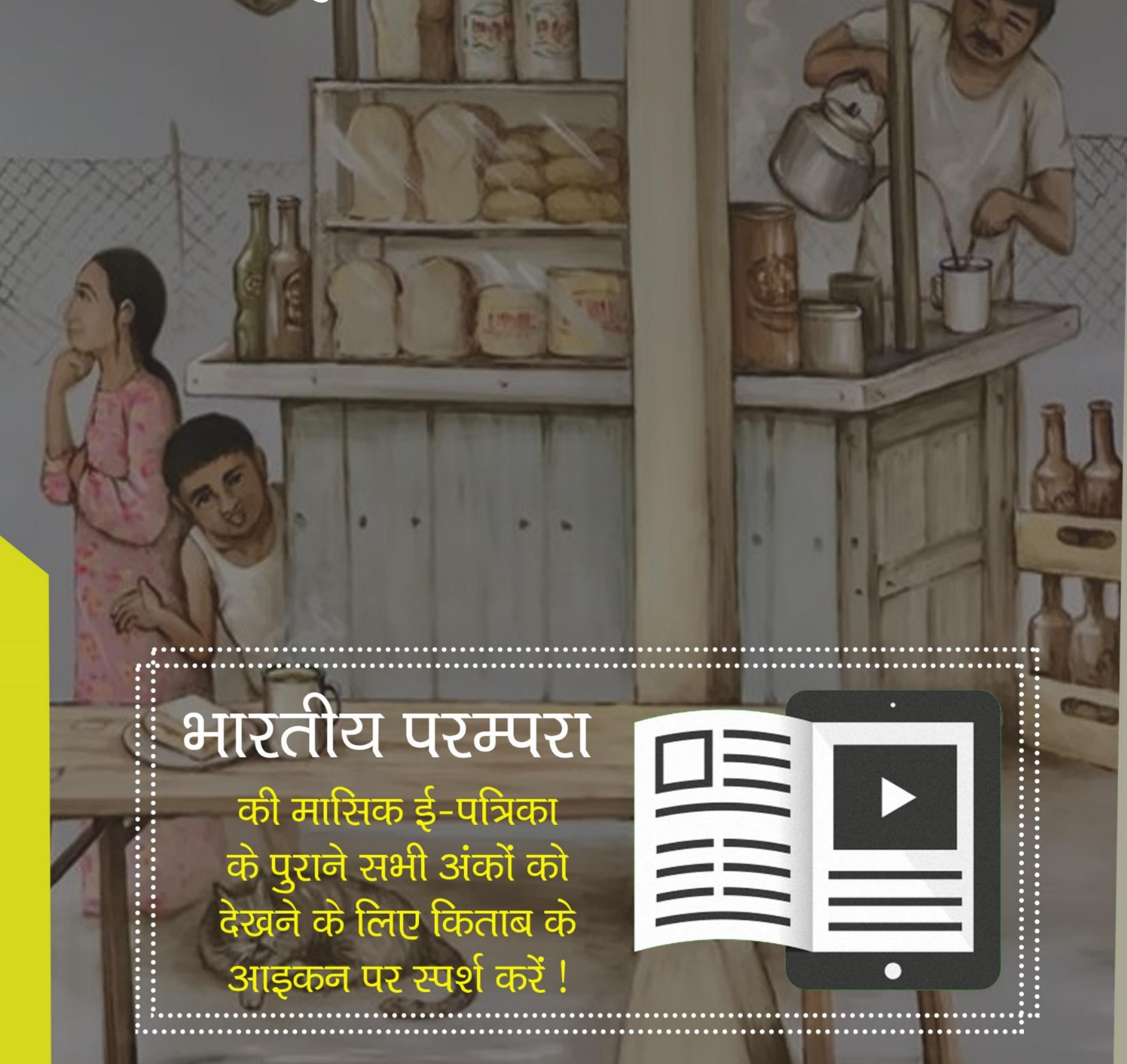

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

हंसी-खुशी के पल

समय एक सा नहीं रहता
यारो, सबका बदलता है..
जो कपडे अंग्रेजों के
गर्वनर पहनकर लोगों को
डराते थे.. आज हमारे
बैंड वाले पहनते है...!

सब्जीवाला - भैया, मैडम जी
इंग्लिश मीडियम से हैं क्या?
पति आश्चर्य से - हां पर क्यों?
सब्जीवाला - क्योंकि मैडम ने
टमाटर नीचे और कद्रदू उस
पर रखा है...।

यमराज औरत से - चलो,
तुम्हें लेने आया हूं।
औरत - बस दो मिनिट दो
यमराज - दो मिनिट में क्या
कर लोगी...?
औरत - स्टेटस डालना है -
Traveling to Yumlok

पृथ्वी, जल, आकाश, वायु,
अग्नि इन पंच तत्वों से
मनुष्य बनता है... इसमे
आधार कार्ड और पैन कार्ड
मिला दो तो इन सबसे
मिलकर मनुष्य भारतीय
बनता हैं ...!

पेट्रोल
का नाम बदलकर
'पुष्पा'
कर देना चाहिए
न झुक रहा है
न कम हो रहा है

सर्दी में सोचता था काश
टंकी से ही गर्म पानी आये

अब जाकर दुआ कबूल हुई
भगवान के घर देर है
अंधेर नहीं

लघुकथा - अपेक्षा

गर्मी की छुट्टियां लगते ही अनु का मन बचपन के गलियारों में पहुंच जाता। मायके में कितनी निश्चिंतता रहती है यह सोचते हुए उसके मुख पर मुस्कान बिखेर गई और माँ के हाथ का बना भोजन पाने उसका मन ललचा उठा। दूसरे ही क्षण पापा के न रहने का गम उसे भीतर तक कचोट रहा था उनके रहते उस घर पर उसे अधिकार सा लगता किंतु अब न जाने क्यों उसके अंतस में वह उन्मुक्तता नहीं थी। विचारों के मंथन को मोबाइल की घंटी ने विराम दिया जैसे ही फोन उठाया भैया ने कहां "छुट्टियां लगने से पंद्रह दिन हो चुके तुम अब तक पहुँची नहीं, मैंने अपनी भावनाओं को संयमित करते हुए बहाना बनाया भैया रिजर्वेशन नहीं मिले बस सात आठ दिन में पहुंचने का प्रयास करती हूँ, तभी भैया ने कहा तुम रहने दो मैं ही तुम्हारे और दीदी के तत्काल में रिजर्वेशन कर रहा हूं कहते हुए भैया ने फोन रखा और मेरा अश्रु बांध फुट पड़ा।" भैया अपनी व्यस्ततम जीवन शैली के चलते भी हमें याद कर रहे इस सोच से जो आंतरिक खुशी मिली उसे बयां करना संभव नहीं था। झट से बड़ी दीदी को फोन लगाया और कहा भैया हमारे टिकट भेज रहें हैं जल्द ही हमारा मिलना होगा कहते हुए दोनों खुशी से खिलखिला उठी।

रात सोने से पहले जब मोबाइल में पीहर जाने का टिकट देखी तो खुशी आसमान छू रही थी। मन में चल रहे उहापोह से झट किनारा किया और बैग जमाने लगी बैग जमाते हुए पतिदेव को न जाने कितनी ही हिदायतें दे रही थी। दूसरे दिन दोपहर में ट्रेन में बैठी, नियत समय पर ट्रेन कोलकाता पहुंची अपने समक्ष भैया भाभी को देखकर खुशी से आंसू छलक आये। माँ बरामदे में खड़े हो इंतजार ही कर रहीं थी। मुझे देख नाराज हो कहने लगी इस बार तुमने आने में

विलंब कर दिया राघव रोज तुम्हें याद कर रहा था बातों बातों में रात कब गहरा गई पता ही नहीं चला। माँ ने भैया भाभी से कहा तुम दोनों सो जाओ तुम्हें तो सुबह जल्दी उठना पड़ता है। हम दोनों बहनों के मनोभाव माँ भांप चुकी थी कहने लगी बेटी तुम्हारी तरह ही राघव ने भी अपने पापा को खोया है उसके कंधों पर भी बहुत सी जिम्मेदारियां हैं वह किससे अपेक्षा रखे...?

आज ही तुम्हें स्टेशन लेने आया था तो वह ऑफिस नहीं जा पाया बेटी तुम्हें अपने पीहर से दूरी बनाने के बजाए उसका सहारा बनना चाहिए। मन में उठ रही शंकाओं का समझदारी से निवारण करना चाहिए बेटी, रिश्ते वहीं रहते हैं दूरियां मन उत्पन्न करता है, **मेरे उपरांत तुम्हारे भाई भाभी से ही तुम्हारा पीहर आबाद रहेगा। अधिक अपेक्षा दुखों को जन्म देती है और परिस्थितियों की गंभीरता को समझ नहीं पाती। भाभी से भी मित्रवत व्यवहार करोगी तो स्नेह ही पाओगी। बेटी तुम्हारे आने से इस घर का हर कोना खिल उठता है। माँ की समझाइश का दोनों बहनों के विचारधारा पर सकारात्मक प्रभाव हुआ।** दूसरे दिन भाभी के साथ साथ ही दोनों बहनें उठ गई और उन्हें काम में हाथ बटाने लगी पलक झपकते दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला **विदाई के समय भाभी माँ की तरह ही हमारे साथ न जाने कितने ही चीज़े बांध रही थी और हमारा मन उनके प्रेम का अमूल्य उपहार पाकर भारी हो रहा था।**

- राजश्री राठी जी

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing
CALL US AT
+918080518745
Ecommerce Solutions
Good Website Get Praise... Great Website Get Business.
Product Management
Reviwe & Rating
Add to Whishlist
Add to Cart
Checkout
Payment Gateway
Shipping
Order Management
Website Security
We help you to transform your STORE into a Digital Brand.
www.mxcreativity.com

पुष्पांजलि
पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका
मई 2022
तपन
पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें
देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।
मूल्य :
मात्र आपकी मुस्कान
सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।
8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

मां तू ऐसी क्यों है?

बचपन में जितनी परवाह थी,
आज भी वो बरकरार क्यों हैं।
निकल गए हम उम्र की आपाधापी में
कितना आगे,
तू आज भी वहीं रुकी क्यों हैं...
माँ तू ऐसी क्यों हैं ?

मैं रिश्तों में उलझ गया, तेरी पसंद नापसंद को भूल गया,
पर याद तुझे आज भी
मेरी हर बात क्यों हैं... माँ तू ऐसी क्यों हैं?

छत तेरी हो न हो, बनती हर मुसीबत में तुम दीवार
समेटकर सारी खुशियाँ, तू हम पर देती वार
ये छत और दीवार सी क्यों है.... माँ तू ऐसी क्यों हैं?

बहू के ताने सुनकर भी देती उसको दुआएं,
बेटे की फिर ले लेती सारी बलाएं
जिसके इंतजार में तूने सही कितनी पीड़ा
आज उस बेटे से कहती कुछ क्यों नही है... माँ तू ऐसी क्यों हैं?

भूल जाएं खुशियों में हम तुझे, लेकिन दर्द से मेरे आज भी
तेरा नाता है,
आह निकलने से पहले जुबां पर माँ तेरा ही नाम आता है।
मोम सा ह्रदय तेरा पाषाण सी सहनशीलता क्यों है...
माँ तू ऐसी क्यों हैं?

बेटे हो भले ही चार, माँ की ममता सबके हिस्से आती,
एक माँ तू है जो
किसी के हिस्से में नहीं आती।
एक होकर चारों में
बंट जाती क्यों है...
माँ तू ऐसी क्यों हैं...?
बता माँ, तू ऐसी क्यों हैं?

- संगीता दरक जी

वट सावित्री व्रत

हिंदू संस्कृति में अनेको तीज-त्योहार, परंपराएं है जो हमें प्रकृति से एवं निसर्ग से जोड़े रखती हैं। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इन को भगवान का दर्जा दिया गया है। जैसे नागपंचमी (सांप की पूजा), पोळा (बैलों की पूजा), वसुबारस या बछ बारस (गाय- बछड़े की पूजा), तीज गुड़ी पाड़वा (नीम और आम के पत्तों का महत्व), दशहरा (शमी वृक्ष के पत्ते), वटपौर्णिमा (वड या बरगद के पेड़ की पूजा)।

बरगद, पीपल, कडुनीम इन जैसे और भी अनेकों वृक्षों को दीर्घायु मिला है। ऐसे पेड़ों के महत्व और उनसे होने वाले फायदों को जन जन तक पहुंचाने के लिए भारतीय संस्कृति में इनकी पूजा करने का उल्लेख है। इन पवित्र और वरदान युक्त पेडों को तोड़ने का साहस भी कम हो जाता है। सभी पेड़ों में बरगद का पेड़ सबसे पवित्र और लंबी आयु वाला माना गया है। इसके अलावा उसकी शाखाओं की वजह से उसका विस्तार बहुत अधिक बढ़ जाता है ऐसे बड या बरगद के वृक्ष की पूजा करके उसी की तरह मेरा घर संसार भी फले-फुले, पति को आरोग्य, संपन्नता और लंबी आयु मिले, धन-धान्य, पोते-पोती इन सब से मेरे संसार का विस्तार हो ऐसी प्रार्थना हर महिला करती है।

इस पूजा के पीछे परंपरागत कथा है। भद्र देश में अश्वपति नाम का एक राजा था। बहुत पूजा, पाठ करके भगवान सावित्र के आशीर्वाद और वरदान से उनको एक सुंदर, सुशील, गुणवान कन्या हुई उसका नाम सावित्री रखा गया। सावित्री की शादी की उम्र होने पर योग्य वर न मिलने की वजह से सावित्री के पिता ने उसे ही अपना जीवन साथी

खोजने के लिए कहा। सावित्री ने साल्व देश के राजा द्युमत्सेन के राजकुमार सत्यवान को चुना। द्युमत्सेन का राज्य शत्रुओं ने छीन लिया था इस वजह से वह अपनी रानी एवं बच्चों समेत तपोवन में रहने लगे थे। सत्यवान अल्पायु थे यह बात नारद मुनि जानते थे, इसलिए उन्होंने सावित्री को सत्यवान से विवाह न करने की सलाह दी। किंतु सावित्री नहीं मानी और सत्यवान से विवाह करके वह जंगल में ही अपने परिवार के साथ रहने लगी। एक बार सत्यवान लकड़िया तोड़ने जंगल में गए वहां मूर्छित होकर गिर पड़े। कहते हैं कि यमराज उनके प्राण ले जाने आए तभी सावित्री यमराज के पीछे पीछे जाने लगी। यमराज के बार-बार मना करने पर भी वह नहीं मानी। तब यमराज ने उसको अपने पति को छोड़कर तीन वरदान मांगने को कहा। पहले वरदान में उसने अपने सास-ससुर के आंखों की रोशनी मांगी। दूसरे वरदान में उनका खोया हुआ राज्य मिलने की मांग की और तीसरे वरदान में खुद के लिए १०० पुत्रों की मांग की। यमराज के तथास्तु कहते ही वह वचनबद्ध हो गए और उनको सत्यवान के प्राण लौटाने पड़े। सावित्री के इस साहस और त्याग से प्रसन्न होकर यमराज ने उसे अखंड सौभाग्य का वरदान दिया। उस समय सावित्री सत्यवान को लेकर वट वृक्ष यानी बरगद के पेड़ के नीचे ही बैठी थी।

इसीलिए यह व्रत हर साल ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को और कुछ जगहो पर जेष्ठ माह के पूर्णिमा को यह व्रत किया जाता है, जिसमें सभी महिलाएं वट वृक्ष की पूजा और व्रत करती है। वट वृक्ष को वस्त्र, फल (आम), फूल चढ़ाती है और वृक्ष को सात बार सूती धागा लपेटती हैं। सात जन्मो तक यही साथी पति के रूप में मिले ऐसी कामना करती हैं। बाकी सुहागन महिलाओं की गेहूं एवं आम के फल से खोल भर्ती हैं और व्रत करती है। **इस तरह आज भी यह परंपरा चली आ रही है। जब हर सुहागन महिला अपने पति के दीर्घायु के लिए वट सावित्री का व्रत करती है।**

"वटवृक्ष लावूनी दारोदारी, साजरी करावी वटपौर्णिमा,
हीच वृक्ष उतरतील, आयुष्यात आपला जीवन विमा।।"

इस तरह पत्नी का अपने पति के लिए प्रेम, समर्पण, परवाह और भरोसा नजर आता है और उसमें हर दिन वृद्धि होती है। धन्य है वह हिंदू संस्कृति जिसकी वजह से इंसान को इंसान से जोड़ कर रखा है। हिंदू त्योहारों ने ही हमें इंसान और इंसानियत के तौर पर अनुशासित किया है। इन सभी का हमारे जीवन में अत्याधिक महत्व है।

- योगिता जी सदानी

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
हार्दिक आभार
www.bhartiyaparampara.com